27. वस्त्रों का संग्रहण

वस्त्रों की उचित सुरक्षा एवं विधिवत संग्रहण का सामान्य ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक है। वस्त्र ही एक ऐसी चीज है जिसका हर एक व्यक्ति से हर समय नाता रहता है। ऐसे में वस्त्रों के सही चयन, कुशलतापूर्वक खरीदारी, सिलाई, धुलाई व इस्तरीकरण से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक चरण है उनका उचित संग्रहण व देख-भाल। थोड़ी-सी असावधानी और उचित संग्रहण व देख-भाल के अभाव में कीमती से कीमती और सस्ते-से-सस्ता वस्त्र खराब हो जाता है, पहनने के लायक नहीं रहता है। अच्छी तरह से रखे हुए वस्त्र ही समय पर उचित परिधान योजना के लिये प्राप्त किये जा सकते हैं। परन्तु कई बार समय के अभाव या सही आदत न होने के कारण वस्त्रों को लापरवाही के साथ इधर-उधर डाल देते हैं, वस्त्रों को न समेटा जाता है, न सलीके से हैंगर पर टांगा जाता है, न तह लगाकर अलमारी या संदूक में रखा जाता है और न ही सही समय पर धोया जाता है। इस प्रकार से रखे गये वस्त्रों को फिर से नहीं पहना जा सकता और न ही पहनने के लायक वो वस्त्र रहते हैं। ऐसे में अगर अचानक हमें किसी पार्टी में जाना है तो तैयार होने के लिये जो पोशाक हमें पहननी है वो या तो गंदी है या प्रेस नहीं है, हुक या बटन व चेन खराब व टूटे हुए हैं, मैचिंग रूमाल गंदा है, टाई प्रेस नहीं है, मोजे यथा स्थान पर नहीं है। यह सब कारण से पार्टी में जाने का मजा और मूड, दोनों खराब हो जाते हैं। साथ ही पार्टी में समय से भी नहीं पहुंचा जाता है। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि वस्त्रों की देख-भाल और संग्रहण उचित तरीके से किया जाये।

संग्रहण के चरण

1. स्थान : उपयुक्त और उचित संग्रहण के लिये स्थान का चयन करना अनिवार्य है। घर के जिस हिस्से में वस्त्रों को रखना है वह स्थान नमी व पानी से दूर होना चाहिये। सभी वस्त्रों को उनकी प्रकृति व किस्म के हिसाब से अल्प व अधिक समय के लिये सहेज कर रखना पड़ता है। वस्त्रों को रखने के लिये बॉक्स-अलमारी का प्रयोग किया जाता है। ये लकड़ी, लोहे व स्टील के हो सकते हैं। इनके अलावा घरों में जो दीवार में खुली अलमारी बनी होती है उसमें भी वस्त्रों को सहेजा जाता है। अटैची व बैग में भी वस्त्रों को रखा जा सकता है। परन्तु अलमारी एक ऐसा स्थान है जो वस्त्रों के लिये उपयुक्त माना जाता है परन्तु मौसम के अनुसार संग्रहण के लिये तो बॉक्स या संदूक ही उपयुक्त होता है। जहां वस्त्रों का संग्रहण करना है वो जगह, संदूक, बॉक्स, अलमारी आदि सभी साफ-सुथरे व नमी रहित होने चाहिये।

2. वस्त्रों की छँटाई : संग्रहण करने में वस्त्रों की छँटाई आवश्यक है। सबसे पहले ये सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है कि कौन से वस्त्र कब-कब काम आते हैं। किन वस्त्रों की आवश्यकता जल्दी-जल्दी अवसरों के अनुसार पड़ती है। जो लम्बे समय के लिये संग्रहित किये जाते हैं, जैसे-मौसम के अनुसार, सर्दी-गर्मी के, उन्हें अलग करना, अवसरों के अनुसार अलग करना, विशेष अवसरों के अनुसार और दैनिक/रोजमर्रा प्रयोग में आने वाले वस्त्रों को अलग करना।

छँटाई करते समय जो वस्त्र घर में धोये जाने वाले हैं और जो शुष्क धुलाई वाले हैं उन्हें अलग-अलग करना। दाग-धब्बों का भी ध्यान रखना अगर लगे हैं तो वस्त्र अलग करना। वस्त्रों की छँटाई करते समय उनमें लगे हुक, आई, काज-बटन, चेन आदि चैक करना। वस्त्र कहीं से फटा हुआ या उधड़ा हुआ न हो। वस्त्र पर लगी सभी परिसज्जाओं को जाँचना जैसे-लेस, फॉल, डिजाइनर बटन उधेड़ना आदि ।

3. स्वच्छ संग्रहण और तत्क्षण मरम्मत : वस्त्रों की छँटाई के बाद उचित और उपयुक्त तरीके से वस्त्रों को धुलवाना अति आवश्यक है और इससे भी ज्यादा आवश्यक है वस्त्रों की मरम्मत करना, जिस भी वस्त्र का बटन, हुक, चेन आदि खराब है, उन सब को ठीक करना, अगर वस्त्र कट-फट गया है तो रफू करना या करवाना आवश्यक है। किसी भी हाल में दाग-धब्बों वाले वस्त्र संग्रहित न करें। पहले दाग-धब्बों को छुड़ा लें। संग्रहण से पहले वस्त्रों को धोना, सुखाना, प्रेस करना आदि क्रियाओं को सम्पूर्ण करना जरूरी होता है।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर हम वस्त्रों का संग्रहण उचित तरीके से कर पायेंगे और वस्त्रों को नुकसान से भी बचा पायेंगे। अन्तिम प्रक्रिया वस्त्रों की संग्रहण में वो ये कि वस्त्रों का इस्तेमाल और प्रयोग एवं

उपयोगिता के अनुसार बांट लेना उपयुक्त होता है। जैसे-नियमित रूप से वर्षभर पहने जाने वाले वस्त्र, अवसर के अनुसार, मौसम के अनुसार इन सबके अलावा घर के सदस्यों के अनुसार वस्त्रों का संग्रहण किया जाता चाहिये।

1. नियमित रूप से वर्षभर पहने जाने वाले वस्त्रों का संग्रहण : वस्त्र हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं। बिना वस्त्रों के जीवन की और दैनिक क्रियाकलापों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वस्त्रों के संग्रहण में सबसे कठिन कार्य नियमित और दैनिक प्रयोग में आने वाले वस्त्रों का संग्रहण और उनकी व्यवस्था को बनाये रखना है। चूंकि ये वस्त्र नियमित रूप से इस्तेमाल होते हैं अत: इनका संग्रहण ऐसी जगह पर होना चाहिये कि जहां से जरूरत के मुताबिक हम वस्त्रों को बिना परेशानी के निकाल कर इस्तेमाल कर सकें।

प्रतिदिन उपयोग होने वाले वस्त्र, जैसे-घर में पहनने वाले, रात्रि में पहनने वाले, स्कूल गणवेश, नैपकिन, मौजे आदि ऐसे वस्त्र हैं जिनको लगभग रोजाना धोना आवश्यक होता है। उचित तरीके से सुखाये, तह लगाये और प्रेस करके रखे वस्त्र ही व्यवस्थित होते हैं।

इन दैनिक प्रयोग में आने वाले वस्त्रों का संग्रहण स्थल अलमारी से ज्यादा उपयुक्त कोई स्थल नहीं हो सकता। क्योंकि इसमें कई साइज की रैक व सेल्फ लगी रहती है। वस्त्रों की साइज के हिसाब से अलमारी के रैक व सेल्फ में वस्त्र रखे जा सकते हैं। जिन वस्त्रों को तह लगा कर नहीं रख सकते उनको टांगने की जगह भी अलमारी में होती है। साड़ी, कोट-पैंट, शर्ट आदि टांगने के लिये इनके अनुसार ही हैंगर का प्रयोग करना चाहिये। इस तरह से रखे व टंगे वस्त्रों की तह खराब नहीं होती और समय पर सही व अच्छी अवस्था में पहनने के लिये सुलभ हो जाते हैं।

अलमारी में छोटे-छोटे रैक भी होते हैं जिनमें छोटे वस्त्रों को रखा जा सकता है, जैसे-रूमाल, मौजे, बनियान एवं अण्डरवियर आदि। इससे आवश्यकता पड़ने पर ये सभी छोटे वस्त्र एक ही स्थान पर मिल जाते हैं।

परिधान-अलंकरण को रखने के लिये भी अलमारी में छोटे रैक बने होते हैं, जिनमें-टाई, टाई-पिन, कप-लिंग, कुरते में लगने वाले बटन आदि। ऐसा करने से समय पर ये छोटी-छोटी और महत्त्वपूर्ण चीजें आसानी से उपलब्ध हो जाती है। कई बार कुछ परिधान ऐसे होते हैं जिनको एक बार पहनने के बाद दुबारा पहनना चाहते हैं, ऐसे में उन वस्त्रों का पसीना हवा में अच्छे से सुखा कर हैंगर में टांग कर अलग से उचित स्थान पर रख देना चाहिये। संग्रहण करते समय कभी भी गन्दे वस्त्रों को साफ वस्त्रों के साथ नहीं रखना चाहिये।

2. अवसर के अनुसार वस्त्रों का संग्रहण : भारतीय संस्कृति में अवसरों के अनुसार परिधान/वस्त्र धारण करने की परम्परा है। विवाह, त्योहार, उत्सव एवं विभिन्न अलग-अलग समारोह में कीमती वस्त्रों को धारण किया जाता है। बनारसी, ब्रोकेड, असली जरी-गोटे और कीमती रत्नों से जड़ित वस्त्र इत्यादि को विशेष देख-भाल और संग्रहण की आवश्यकता होती है। क्योंकि इनको लम्बे समय के लिए सहेज कर रखना होता है। इसके लिये संदूक, अटैची और बन्द अलमारी का उपयोग किया जा सकता है। इनको ऊनी और गर्म कपड़ों के साथ नहीं रखना चाहिये। असली सोने-चाँदी से जड़े वस्त्र, बनारसी साड़ियाँ, ब्रोकेड, जरी-गोटे के वस्त्रों को साफ-सुथरे मलमल के कपड़े में लपेट कर रखना चाहिये। इससे जरी व गोटा और कीमती रत्न काले नहीं पड़ते और खराब नहीं होते। जिस जगह पर वस्त्रों को सहेज रहे हैं, जैसे-संदूक, अलमारी उनको साफ कर, नीम की सूखी पत्तियां बिछाकर, साफ कपड़ा बिछाकर कीमती कपड़ों को रखना चाहिये। समय-समय पर इन जरी वाले वस्त्रों को हवा में फैलाकर तह बदलकर रखते रहना चाहिये। इससे वस्त्र की गुणवत्ता बनी रहती है। रेशमी वस्त्रों को भी उपरोक्त कीमती वस्त्रों की ही तरह से सहेज कर रखना चाहिये। इन्हें भी समय-समय पर खुली हवा में फैला कर इनकी भी तह बदल देनी चाहिये। चूंकि रेशमी वस्त्र कीमती होने के साथ नाजुक भी होते हैं अत: विशेष देख-भाल की आवश्यकता होती है।

3. मौसम के अनुसार वस्त्रों का संग्रहण : मौसम के अनुसार वस्त्रों को एक लम्बे समय के लिये सहेजा जाता है। संग्रहण से पहले सभी गर्म कपड़ों को धुलाई या शुष्क धुलाई करवा या कर लेनी चाहिये। ऊनी वस्त्रों के लिए बॉक्स, संदूक या आजकल लकड़ी का बॉक्स वाला दीवान, उपयुक्त स्थान है। संदूक को साफ-सुथरा करके, नीचे अखबार बिछा देने चाहिये। नीम की सूखी पत्तियां या नेप्थलीन की गोलियां डाल देनी चाहिये। अब वस्त्रों को अच्छे से तह लगा कर एक के ऊपर एक परत बनाते हुए रखे इन कपड़ों के बीच-बीच में भी नेफ्थलीन की गोलियां डाल देनी चाहिये। शुष्क धुलाई किये वस्त्रों को अखबार में लपेट कर रखना चाहिये जबकि कोट, जैकेट, चमड़े की जैकेट, फर के कोट इत्यादि को कवर में रखकर अलमारी में टांग देना चाहिये जिससे उनकी प्रेस व क्रीज खराब न हो पर अलमारी में बंद रहे।

कम्बल, रजाई आदि का संग्रहण शीत ऋतु के जाने के बाद कर देते हैं। संग्रहण करने से पहले रजाई व कम्बल के कवर उतार लेने चाहिये। उसके बाद रजाइयों को अच्छे से धूप दिखा कर और कम्बल को धुलवा कर या शुष्क धुलाई करवा कर, बड़े बिस्तर रखने वाले संदूक में नेफ्थलीन की गोलियां डाल कर, सहेजकर रखने चाहिये। रजाइयों और कम्बलों के कवर को डिटॉलयुक्त पानी से धो कर अच्छे से सुखा कर रखना चाहिये। इन कपड़ों की तहों के बीच-बीच में नेफ्थलीन की गोलियां रखनी चाहिये।

वस्त्रों का संग्रहण करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिये :

1. संग्रहण करने से पहले वस्त्रों की छँटाई कर लेनी चाहिये।
2. संग्रहण से पहले वस्त्रों की मरम्मत एवं सफाई कर लेनी चाहिये।
3. वस्त्रों पर लगी अलंकरण सामग्री जो हटाई जा सके, उतार लेनी

चाहिये।

4. जिस स्थान पर संग्रहण कर रहे हैं वह स्थान साफ-सुथरा नमी रहित होना चाहिये।

5. वस्त्रों को भी अच्छे से धूप में सुखाकर ही सहेजना चाहिये।

6. ये सुनिश्चित करें कि वस्त्र पर किसी भी प्रकार की धूल व गन्दगी न लगी हो।

7. साफ वस्त्रों के साथ गन्दे वस्त्रों का संग्रहण नहीं करना चाहिये।

8. रेशमी व महंगे जरी-गोटे, ब्रोकेड व बनारसी वस्त्रों को समय-समय पर खुली हवा में फैलाकर और तह बदल कर रखना चाहिये।

9. ऊनी वस्त्रों को कीड़ों से बचाने के लिये उन्हें अखबार में लपेट कर रखना चाहिये।

10. एक बार उपयोग करने के बाद परिधान को खुली हवा में सुखाकर अलग रखना चाहिये।

वस्त्र संग्रहण से लाभ :

1. वस्त्रों की कार्यक्षमता के साथ उनकी उम्र भी बढ़ती है।
2. वस्त्र सुरक्षित रहते हैं और समय पर सही अवस्था में उपलब्ध होते हैं।
3. कीमती और दुर्लभ वस्त्रों को नवीन, जीवन्त और नष्ट होने से बचाया जा सकता है।
4. वस्त्रों के संग्रहण से समय, धन व श्रम की बचत होती है।
5. संग्रहण से वस्त्रों का दुरुपयोग नहीं होता है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. वस्त्रों का संग्रहण एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है।
2. नियमित पहने जाने वाले वस्त्रों की साफ-सफाई करना आवश्यक है।
3. वस्त्रों का संग्रहण उनकी जरूरत और उपयोगिता के आधार पर किया जाता है।
4. संग्रहण करते समय वस्त्र साफ हो, धूल-मिट्टी, नमी व गन्दगी से रहित हो।
5. संदूक या अलमारी को वस्त्र संग्रहण के बाद बन्द कर देना चाहिये।
6. संग्रहण के प्रथम चरण प्रमुख-उचित स्थान, वस्त्रों की छँटाई, स्वच्छ संग्रहण और तत्क्षण मरम्मत आदि।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) वस्त्रों के संग्रहण से बचत होती है :

(अ) समय (ब) धन (स) श्रम (द) उपरोक्त सभी

(ii) किन वस्त्रों को समय-समय पर खुली हवा में फैलाकर तह बदलनी चाहिये।

(अ) ऊनी वस्त्रों की (ब) सूती वस्त्रों की

(स) रेशमी वस्त्रों की (द) उपरोक्त सभी

(iii) मौसम के अनुसार वस्त्रों का संग्रहण करते हैं :

(अ) अल्प काल के लिये (ब) दीर्घकाल के लिये

(स) एक महीने के लिये (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(iv) अखबार कपड़ों को बचाता है :

(अ) कीड़ों से (ब) नमी से

(स) फफूंद से (द) सड़ने से

(v) वस्त्र रखने की संदूक और अलमारी होनी चाहिये।

(अ) साफ व नम (ब) बड़ी व खुली

(स) स्वच्छ व सूखी (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) संग्रहण से वस्त्रों को .... होने से बचाया जा सकता है।

(ii) संग्रहण से वस्त्रों की .... एवं .... बढ़ जाती है।

(iii) .... कपड़ों के साथ .... कपड़ों का संग्रहण नहीं करना चाहिये।

(iv) संग्रहण करते समय .... की गोलियों का इस्तेमाल करना चाहिये।

(v) सर्वप्रथम वस्त्रों की .... करनी चाहिये, तत्पश्चात् संग्रहण।

3. वस्त्रों का संग्रहण क्यों अनिवार्य है?

4. स्वच्छता से संग्रहित वस्त्रों का महत्त्व बताइये।

5. वस्त्रों का उचित संग्रहण करते समय किन बिन्दुओं को ध्यान में रखेंगे?

6. वस्त्रों को समय-समय पर धूप-हवा दिखाना क्यों अनिवार्य है? स्पष्ट कीजिये।

7. संग्रहण से पूर्व वस्त्रों की छँटाई व मरम्मत आवश्यक है। क्यों? स्पष्ट कीजिये।

8. दैनिक प्रयोग में आने वाले वस्त्रों की सफाई अनिवार्य है। विवेचना करें।

9. महंगे व कीमती वस्त्रों की संग्रहण प्रक्रिया का वर्णन कीजिये।

उत्तरमाला :

1. (i) द, (ii) स, (iii) ब, (iv) अ, (v) स

2. (i) नष्ट, (ii) कार्यक्षमता एवं आयु, (iii) साफ, गन्दे/ऊनी, रेशमी, (iv) नेफ्थलीन, (v) छँटाई